महिला खोजकर्ताओं का योगदान

कर्टनी स्टीफेंस (TED Ed)

एनीमेशन: लिजी अकाना

आज के समय में हम सफलता को बहुत हल्के में लेते हैं. हमें लगता है कि अगर हम मेहनत करें, तो एक दिन हम मिस्त्र के पिरामिड के सामने खड़े हो सकते हैं, या फूल की कोई नई प्रजाति ढूंढ सकते हैं, या चाँद पर भी जा सकते हैं.

मगर हमेशा ऐसा नहीं था. उन्नीसवीं और बीसवीं सदी तक यूरोप की महिलाएं घर की खिड़कियों से बाहर की दुनिया को केवल अफ़सोस से निहार सकती थीं. बाहर की दुनिया उनकी पहुँच के बाहर थी.

उस वक्त महिलाओं की जिंदगी अक्सर केवल घर के काम करने और आपस में गप्पें मारने तक ही सीमित होती थी. भले ही वे रोमांचक यात्राओं पर किताबें पढ़ती थीं, पर उनमें से ज्यादातर महिलाएं अपने पैदा होने की जगह से भी बाहर नहीं जा पाती थीं.

मगर उसी समय तीन ऐसी महिलाएं भी थीं जिन्होंने घर से बाहर निकलकर दुनिया खोजी. उन्होंने अपनी पारिवारिक सुविधाओं का इस्तेमाल किया, अपनी हिम्मत पर भरोसा रखा और दूसरों की “ना” नहीं सुनी.
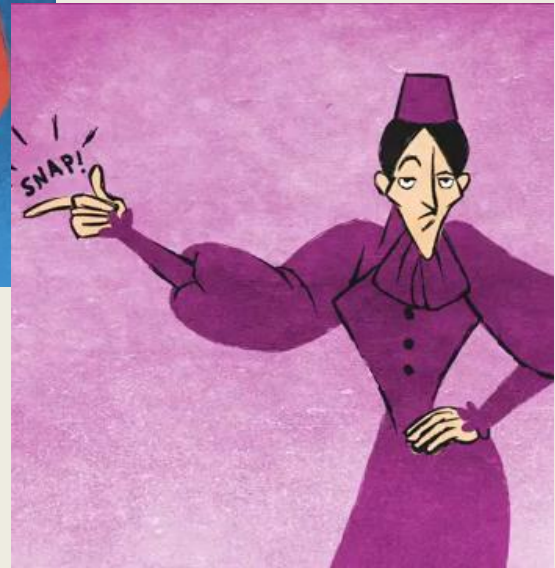
मैरीएन नॉर्थ एक शौकिया माली और चित्रकार थीं.

1860 में वे समुद्र पार कर कई देशों में गईं. इन यात्राओं में उनके साथ केवल अपना चित्र बनाने का सामान, ऊंची पहुँच वाले परिजनों के दिए हुए कुछ दस्तावेज, और फूलों के प्रति गहरा प्रेम था.

उन्होंने जमैका, पेरू, जापान, भारत और ऑस्ट्रेलिया में यात्राएं कीं. नई-नई प्रजातियों के फूलों के चित्र बनाने के लिए उन्होंने अन्टार्कटिका के अलावा दुनिया के हर महाद्वीप का दौरा किया!

उन्होंने लिखा:

“मेरे पास चित्र बनाने के लिए इतनी सारी चीजें थीं कि मैं बहुत भावुक हो गई. पहाड़ बहुत ही खूबसूरत नीले रंग के थे. मैंने कभी भी इतने सारे रंग एक साथ नहीं देखे थे!”

बिना किसी हवाई जहाज, गाड़ी या सड़क के, नॉर्थ ने गधों की सवारी की, चट्टानें चढ़ीं और दलदल पार किए ताकि वे नए-नए पौधों तक पहुँच सकें.

और यह सारा काम उन्होंने उस जमाने समय की महिलाओं की परंपरागत पोशाक पहनकर किया!

क्योंकि उस वक्त तक फोटो खींचने की तकनीक अच्छे से विकसित नहीं हुई थी, मैरिएन के चित्रों ने यूरोप के वैज्ञानिकों को पहली बार दुनिया के अनोखे पौधों की झलक दिखलाई. कई पौधे उनके नाम पर रखे गए क्योंकि वे पहली यूरोपियन नागरिक थीं जिन्होंने पौधों की उन नई प्रजातियों का अध्ययन किया था.
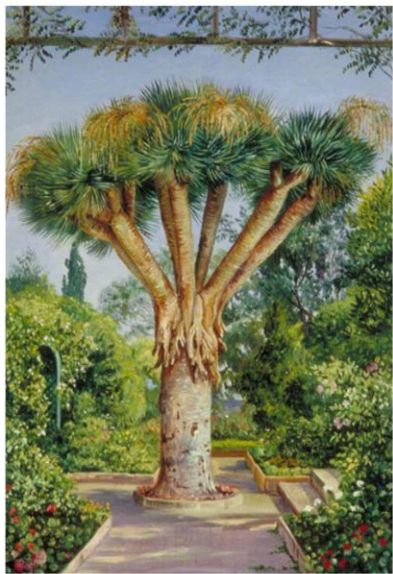
लन्दन की **मैरी किंग्सली** यात्रा पसंद करने वाले एक डॉक्टर की गोद ली हुई बेटी थीं. उन्हें अपने पिता से अफ्रीका के आदिवासियों के रीति-रिवाज सुनना बहुत पसंद था.

अफ्रीका के लोगों पर किताब लिखने के बीच में ही उनके पिता की मृत्यु हो गई. इसलिए किंग्सली ने निर्णय लिया कि वे अपने पिता की अधूरी लिखी हुई किताब को पूरा करेंगी.

उनके पिता के दोस्तों ने उन्हें जाने से बहुत मना किया और उन्हें दूसरे देशों में होने वाली जानलेवा बीमारियों के बारे में बताया. मगर उन्होंने किसी की नहीं सुनी.

1896 में दो बड़ी अटैचियों के साथ वे लन्दन से अफ्रीका के सिएरा लीओन देश चली गईं.

अफ्रीका के जंगलों में घूमते हुए उन्होंने एक जानवर के असली में होने का सबूत दिया जिसे लोग काल्पनिक मानते थे– गोरिल्ला.

उन्होंने बताया कि इन यात्राओं में उन्होंने मगरमच्छ के साथ लड़ाई की, तूफ़ान में फंसीं, और दरियाई घोड़े को अपनी छाता से गुदगुदी दी ताकि वह उनकी नाव से दूर हट जाए.

एक बार कांटों से भरे गड्ढे में गिरने पर उनकी मोटे कपड़े की पोशाक ने उन्हें जख्मी होने से बचा लिया.

किंग्सली ने लिखा:

“अच्छे से पका हुआ सांप यहाँ मिलने वाला सबसे अच्छा खाना है.”

मगर जब समाज के नियमों को तोड़ने की बात आती है, तो **अलेक्ज़ेंड्रा डेविड नील** जितना कोई बहादुर नहीं था. फ्रांस की अलेक्ज़ेंड्रा ने पूर्वी देशों के धर्मों के बारे में बहुत पढ़ा था.

वे खुद को पेरिस के बुद्धिजीवियों के सामने साबित करना चाहती थी जोकि सारे पुरुष थे. पर किसी ने उनकी नहीं सुनी.

उन्होंने निर्णय लिया कि कोई भी उन्हें गंभीरता से तभी सुनेगा जब वह खुद तिब्बत के पहाड़ों में ल्हासा शहर जाएंगी जिसके किस्से बहुत मशहूर थे. उन्होंने लिखा:

“लोगों को कहना पड़ेगा- 'यह औरत उन चीजों के साथ रही है जिनके बारे में वह बात करती है, उसने उन्हें छुआ है और अपनी आँखों से खुद देखा है'.”

जब अलेक्जेंड्रा भारत के रास्ते तिब्बत की सीमा पर पहुंची तो उन्हें अन्दर प्रवेश करने से मना कर दिया गया.

इसलिए उन्होंने तिब्बत के पुरुष का भेष बनाया और अन्दर घुस गईं. याक की खाल के कपड़े और खोपड़ियों की माला पहने हुए वे हिमालय के पहाड़ चढ़कर ल्हासा शहर पहुंची.

पर ल्हासा पहुँचकर लोगों को पता चल गया कि वे महिला हैं और उन्हें जेल में डाल दिया गया. मगर उन्होंने हार नहीं मानी और कई सालों तक तिब्बत में रहकर तिब्बती धर्म पर कई किताबें लिखीं.

अलेक्जेंड्रा की किताबों को पेरिस के लोगों ने खूब सराहा और उन्हें आज भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है.

इन बहादुर महिलाओं और इनकी जैसी अन्य महिला खोजकर्ताओं ने पूरी दुनिया की सैर की और यह साबित किया कि खुद की आँखों से देखने की इच्छा से इतिहास बदला जा सकता है. यही नहीं, उन्होंने इस बात को भी चुनौती दी कि क्या-क्या करना संभव नहीं है.

उन्होंने अपनी उत्सुकता के दम पर दूसरे लोगों के नजरिये और विशेषताओं को जानने की कोशिश की; शायद इसलिए क्योंकि उनके समुदाय के लोग उन्हें भी अजीब मानते थे.
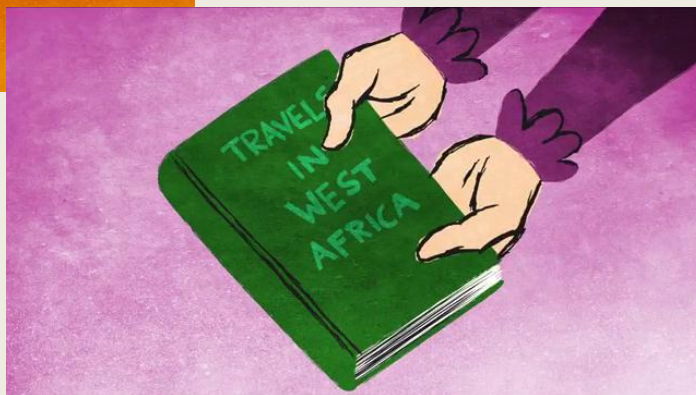
मगर उनकी यात्राओं में उन्हें सिर्फ नई जगहें ही देखने को नहीं मिली... इन यात्राओं में उन्हें वह चीज भी मिली जो केवल वे ही ढूंढ सकती थीं- स्वयं पर विश्वास.